Class - B.Com I
Subject - BMC
Paper - I (S)
Topic - Management Thought (Part II)
Lecture Sequence - 7
By Dr. C P Sahu
Marwari College, Darbhanga

## प्रबन्ध की विचारधारा (भाग-2)



### (ii) प्रबंध-प्रक्रिया विचारधारा -

प्रबन्ध-प्रक्रिया विचारधारा प्रबन्ध को लोगों के साथ मिलकर कार्य करने और उनके द्वारा कार्य करवाने की प्रक्रिया है।
प्रबंध प्रक्रिया का विश्लेषण हेनरी फेयोल (Henry Fayol) साहेब ने अपनी पुस्तक ~~फ्रेंच~~ फ्रेंच भाषा में लिखा था। बाद में उन्होंने अंग्रेजी भाषा में General and Industrial management का पुस्तक लिखा। उन्होंने इस पुस्तक के माध्यम से प्रबन्ध के सिद्धान्तों का विकास करने तथा अपने विचारों को सम्बद्ध तत्वज्ञान के रूप में व्यवस्थित करने का प्रयास किया। उनके विचारों को आधुनिक प्रबन्ध विचारधारा के विकास में अत्यन्त महत्वपूर्ण दिया गया। इसलिए इस विचारधारा ~~के~~ को उन्हें जन्मदाता माना जाता है।

प्रबन्ध-प्रक्रिया विचारधारा की मान्यता है कि प्रबन्ध एक प्रक्रिया है और इसके कार्यों के विश्लेषण के द्वारा इसे अच्छे ढंग से समझा जा सकता है। यह विचारधारा प्रबन्ध को एक सार्वभौमिक प्रक्रिया मानती है। प्रबन्ध प्रक्रिया के अन्तर्गत नियोजन, संगठन, निर्देशन, नियंत्रण इत्यादि आते हैं। यह विचारधारा प्रबन्ध के आधारभूत कार्यों का निर्धारण करती है। इसलिए इसे कार्यात्मक विचारधारा के नाम से जाना जाता है।

### प्रबन्ध के क्षेत्र में हेनरी फेयोल का योगदान -

(1) औद्योगिक क्रियाओं का वर्गीकरण को निम्न तरह विभाजित किया जा सकता है
(i) तकनीकी क्रिया (ii) वाणिज्यिक क्रिया (iii) वित्तीय क्रिया (iv) सुरक्षा सम्बंधी क्रिया (v) लेखाकर्म क्रिया (vi) प्रबन्धकीय क्रिया

(2) प्रबन्धकीय योग्यता एवं प्रशिक्षण के अन्तर्गत (i) अच्छा स्वास्थ्य एवं स्फूर्ति (ii) विवेक शक्ति एवं सतर्कता (iii) नैतिक शक्ति (iv) सामान्य ज्ञान (v) विशिष्ट ज्ञान (vi) अनुभव

(3) प्रबन्ध के तत्व - पूर्वानुमान एवं नियोजन, संगठन, समन्वय, आदेश एवं नियंत्रण।

(4) प्रबन्ध के सामान्य सिद्धान्त - हेनरी फेयोल साहेब ने 14 सिद्धान्तों का

प्रतिपादन किया है जो निम्न है —

① **कार्य का विभाजन** : फेयोल द्वारा प्रत्येक कार्य को एक से अधिक भागों में बाँटने का प्रस्ताव किया है। ऐसा करने से एक ओर कार्य करने में विशिष्टीकरण के लाभ होंगे वहीं दूसरी ओर संस्था के उत्पादन में वृद्धि होगी। इस सिद्धान्त का मुख्य उद्देश्य अच्छे तथा विस्तृत परिणाम प्राप्त करना है।

② **अनुशासन** - आज्ञा का पालन, नियमों की आस्था, पूरी परिश्रम से कार्य तथा सम्बंधित अधिकारियों के प्रति आदर करना प्रत्येक संस्था के कुशल संचालन के लिए आवश्यक है। किसी संस्था का कुशल संचालन अच्छे मोर्चे पर निर्भर करता है।

③ **कर्मचारियों का पारिश्रमिक** - कर्मचारियों के पारिश्रमिक की दर तथा भुगतान की प्रणाली संतोषप्रद होनी चाहिए। कर्मचारियों को उत्साहित करने के लिए अवित्तीय प्रेरणाओं को भी अपनाना चाहिए।

④ **अधिकार एवं उत्तरदायित्व** - अधिकार उत्तरदायित्व के अनुरूप होने चाहिए तथा उत्तरदायित्व अधिकार के रूप में। अधिकार कम उत्तरदायित्व अधिक होंगे तो उत्तरदायित्व का पूरा करना संभव नहीं होगा। यदि अधिकार अधिक तथा उत्तरदायित्व कम होंगे तो अधिकार का दुरुपयोग होगा

Scanned with CamScanner

(5) आदेश एवं एकता - कर्मचारियों को सभी आदेश एक ही अधिकारी से मिलना चाहिए क्योंकि व्यक्ति को एक समय में एक से अधिक अधिकारियों के आदेश पालन करने में कठिनाई होगी। अनेक अधिकारियों के आदेश से श्रमिक भ्रमित हो जाता है। जिससे अपने दायित्वों से विमुख हो जाता है।

(6) निर्देश की एकता - एक इकाई की एक योजना। एक योजना के लिए एक प्रबन्धक होना चाहिए। एक ही योजना को अनेक व्यक्तियों को भार देने से क्रियान्वयन में दिक्कत हो सकती है।

(7) सामान्य हितों को व्यक्तिगत हितों पर प्राथमिकता - व्यक्तिगत हितों को कभी भी संस्था के हितों के ऊपर नहीं समझना चाहिए। व्यक्तिगत हितों के ऊपर सामान्य हितों को ही प्राथमिकता होनी चाहिए।

(8) सोपानी शृंखला - उच्चतम स्तर से निम्नतम स्तर तक अधिकारियों के अधिकारों तथा दायित्वों को शृंखलाबद्ध किया जाना चाहिए। एक अधिकारी किसे आदेश देगा तथा किसे अपने कार्य की रिपोर्ट देगा यह स्पष्ट रूप से तय होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

आदेश देते समय निर्धारित क्रम को तोड़ना नहीं चाहिए।

(9) **केन्द्रीयकरण** - छोटे स्तर पर उत्पादन करने वाली संस्थाओं में तो केन्द्रीकरण स्वाभाविक लेकिन बड़ी संस्थाओं में केन्द्रीयकरण है। निर्णय लेते समय संस्था के हित, कर्मचारियों की भावनाओं तथा कार्य की प्रकृति इत्यादि सभी बातों पर विचार करना चाहिए।

(10) **व्यवस्था** - प्रत्येक उपक्रम में सामग्री तथा सामाजिक व्यवस्था होनी चाहिए। प्रत्येक वस्तु के लिए निश्चित स्थान तथा हर वस्तु अपने स्थान पर हो। सामाजिक व्यवस्था से आशय है उचित कार्य उचित व्यक्तियों को सौंपा जाए। ऐसा करने से संगठन के संसाधनों का प्रभावशाली उपयोग हो सकेगा।

(11) **समता** - समता का आशय न्याय तथा समानता से है। किसी संस्था के कर्मचारी में निष्ठा तथा स्वामिभक्ति जगाने के लिए समता के सिद्धान्त को अपनाना जरूरी है।

(12) **कर्मचारी के कार्यकाल में स्थिरता** - प्रबन्धक के लिए आवश्यक है कि कर्मचारी को जल्दी-जल्दी नहीं हटाना चाहिए। उनमें सुरक्षा की भावना पैदा करना चाहिए। कार्यकाल में स्थिरता लाने का प्रयास करना चाहिए।

Scanned with CamScanner

(13) पहलपन - प्रत्येक पहल करने वाले कर्मचारियों को प्रोत्साहित करना चाहिए। आपसे कर्मचारी में उत्साह एवं कार्यकुशलता में वृद्धि होती है। प्रबन्धक को अपनी प्रतिष्ठा एवं आत्म सम्मान को त्यागकर अपने अधीनस्थों कर्मचारी को अवसर देना चाहिए। (5)

(14) सहयोग की भावना - प्रबन्धक को अपने कर्मचारियों में सहयोग की भावना उत्पन्न करना चाहिए। आपसी सहयोग ही कार्य को सम्पन्न करता है। एक टीम के समूह के कर्मचारियों में फूट होना संस्था के लिए हानिकारक है।

इस प्रकार प्रबन्ध की विचारधारा में प्रमुख टेलर एवं फ्रेयाल थे। नवशास्त्रीय विचारधारा एवं आधुनिक विचारधारा पर भी ध्यान देना चाहिए। जिससे संस्था की उन्नति के साथ-साथ अधिक से अधिक लाभ प्राप्त किया जा सके क्योंकि व्यवसाय का मुख्य उद्देश्य ही होता है लाभ प्राप्त करना।

—— x ——

Scanned with CamScanner